

License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, [Biblica Inc.](#), 2023, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

1 इतिहास 1:1-9:34

1 इतिहास में दर्ज वंशावलियाँ आदम से शुरू होती हैं। वे लगभग ईसा पूर्व 538 में समाप्त होती हैं। यही वह समय था जब कुसू ने बाबुल में रहने वाले यहूदियों को यहूदा लौटने की अनुमति दी।

ये वंशावलियाँ परमेश्वर के लोगों के सम्पूर्ण इतिहास को संक्षेप में बताने का एक तरीका थीं। यह इतिहास बाइबल की पुस्तकों में उत्पत्ति से 2 राजाओं तक बताया गया था। आदम के बाद, वंशावलियाँ कई लोगों का अनुसरण करती हैं जिनके साथ परमेश्वर ने वाचा बाँधी। इसमें नूह, अब्राहम, इसहाक, याकूब और दाऊद शामिल हैं।

वंशावलियाँ उन लोगों के समूहों का भी अनुसरण करती हैं जिनसे परमेश्वर ने वाचा नहीं बाँधी थी। इसमें इश्माएल और एसाव के परिवार शामिल हैं। ये परिवार इसाएल के 12 गोत्रों के इतिहास में महत्वपूर्ण थे। वंशावलियाँ याकूब के पुत्रों का अनुसरण करती हैं, सिवाय दान और जबूलून के। वे उत्तरी राज्य का हिस्सा थे।

1 इतिहास ने उत्तरी राज्य के गोत्रों के बारे में कुछ स्पष्ट किया। वे कभी अश्शूर से वापस नहीं आए। वहीं उन्हें बंधुआई में रहने के लिए मजबूर किया गया था। 1 इतिहास ने परमेश्वर के बारे में भी कुछ स्पष्ट किया। परमेश्वर ने उन लोगों की प्रार्थना का उत्तर दिया जो उनकी दोहाई लगाते थे और उनसे मदद की आशा रखते थे। यह तब सच था जब याबेश ने प्रार्थना की। यह तब भी सच था जब यरदन नदी के पूर्व के गोत्रों ने युद्ध के दौरान प्रार्थना की।

परिवार की वंशावलियाँ यहूदा और लेवी के गोत्रों और राजा दाऊद पर केंद्रित हैं। 1 इतिहास इन वंशावलियों का अनुसरण करता है जब तक कि दक्षिणी राज्य की बंधुआई का अंत नहीं हो जाता। इस बात ने यहूदियों को कुछ महत्वपूर्ण बात समझने में मदद की। उन्होंने वाचा के श्रापों का सामना किया था। उन्हें उस भूमि को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। लेकिन परमेश्वर उनके प्रति अब भी विश्वासयोग्य थे। जो यहूदा लौट आए थे, उन्हें दाऊद के उदाहरण को याद रखना चाहिए। उन्हें दाऊद द्वारा नियुक्त लेवियों के उदाहरण को याद रखना चाहिए। उन्हें सीने पर्वत की वाचा का पालन करना चाहिए और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से आराधना करनी चाहिए।

1 इतिहास 9:35-20:8

शाऊल और उसके वंशजों ने इसाएल में राजाओं के रूप में शासन करना जारी नहीं रखा। इसका कारण यह था कि

शाऊल यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं था। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने शाऊल से अपने प्रेम को हटा लिया। इसका अर्थ नहीं था कि परमेश्वर ने शाऊल से प्रेम करना बंद कर दिया और उनसे घृणा करने लगे। इसका अर्थ यह था कि परमेश्वर ने इसाएलियों का शासक बनने के लिए किसी और को चुना। परमेश्वर ने दाऊद और उसके परिवार की वंशावली को चुना।

1 इतिहास में दर्ज दाऊद की कहानियाँ उन समयों को दिखाती हैं जब दाऊद परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था। वे कुछ ऐसे समयों को शामिल नहीं करतीं जब दाऊद विश्वासयोग्य नहीं थे। वे कहानियाँ 2 शमूएल में दर्ज हैं। 1 इतिहास दिखाता है कि दाऊद ने युद्धों के बारे में परमेश्वर से सहायता और सलाह मांगी। दाऊद इस बात का उदाहरण था कि परमेश्वर की आराधना कैसे अत्यधिक आनंद के साथ की जाए। दाऊद इसाएलियों की आराधना की प्रथाओं में व्यवस्था लाए। उन्होंने सुनिश्चित किया कि लेवीय परमेश्वर की, बलिदानों के बारे में आज्ञाओं का पालन करें। वे आज्ञाएँ मूसा की व्यवस्था में दर्ज थीं। दाऊद ने यह भी सुनिश्चित किया कि लेवीय लोगों की अगुवाई परमेश्वर की स्तुति में करें। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति गाकर, नृत्य करके और वाद्य यंत्र बजाकर की। 1 इतिहास अध्याय 16 का गीत भजन संहिता 96, 105 और 106 के भागों को शामिल करता है।

1 इतिहास में दर्ज दाऊद की कहानियाँ इसाएलियों के बारे में भी कुछ दिखाती हैं। पूरे समुदाय ने दाऊद का राजा के रूप में समर्थन किया। इसमें एक विशेष समूह के शक्तिशाली योद्धा शामिल थे। इसमें सभी 12 गोत्रों के प्राचीन और पुरुष शामिल थे जो लड़ सकते थे। इसमें परिवार और पड़ोसी शामिल थे जो दाऊद को राजा के रूप में मनाने के लिए भोजन लाए। दाऊद ने इसाएलियों को मिलकर निर्णय लेने में अगुवाई की। दाऊद ने उन्हें ऐसे निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार थे। दाऊद ने ऐसा तब किया जब उन्होंने वाचा का सन्दूक यरूशलेम लाने का निर्णय लिया। यह इसाएलियों के पहले के समय में निर्णय लेने के तरीके से बहुत अलग था। 12 न्यायियों के समय में, लोग वही करते थे जो उन्हें सही लगता था (न्यायियों 21:25)।

दाऊद उस प्रकार के राजा थे जिनकी आवश्यकता न्यायियों की पुस्तक में दिखाई गई थी। दाऊद और इसाएली लोगों ने उन जातियों के खिलाफ लड़ने के लिए कड़ी मेहनत की जिन्होंने उन पर हमला किया। उन्होंने यरूशलेम शहर को बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। परमेश्वर ने दाऊद और लोगों की कड़ी मेहनत को आशीष दी और उन्हें सफल बनाया। प्रभु उसके साथ है, इन शब्दों का सही मायने में यही अर्थ है। यह भी इसका अर्थ है कि प्रभु ने उसके राज्य का सम्मान किया। परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा बाँधकर उसके राजा के

रूप में शासन को सुरक्षित किया। परमेश्वर ने वादा किया कि वह दाऊद के बाद आने वाले पुत्रों से अपना प्रेम कभी नहीं हटाएंगे। इसका अर्थ था कि दाऊद के परिवार की वंशावली से कोई न कोई हमेशा राजा होगा। बाबुल से लौटे यहूदी उस राजा के आने और शासन करने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

1 इतिहास 21:1-22:19

1 इतिहास में एक कहानी दर्ज है जिसमें दाऊद ने कुछ ऐसा किया जो परमेश्वर नहीं चाहते थे। यह कहानी बताती है कि दाऊद ने उस स्थान को कैसे चुना जहाँ मन्दिर बनाया जाएगा।

दाऊद ने इसाएल के सभी योद्धाओं की गिनती करवाई। इसे एक दुष्ट कार्य माना गया। इसे पूरी तरह से समझा नहीं गया कि यह गलत क्यों था। शायद जिस तरीके से दाऊद ने पुरुषों की गिनती की, वह निर्गमन 30:12-16 में दर्ज निर्देशों के खिलाफ थी।

बाद में दाऊद ने पहचाना कि उसने पाप किया था। उसने पश्चाताप किया। परमेश्वर ने दाऊद का दोष हटा दिया लेकिन फिर भी उसके किए के लिए न्याय लाए। जब परमेश्वर ने दाऊद को दण्डित किया, तब पूरे इसाएल ने कष्ट सहा।

जब दाऊद ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर का सम्मान करने के लिए बलिदान किए, तो महामारी रुक गई। उसने यह एक यबूसी व्यक्ति के खलिहान में किया। परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थनाएँ सुनीं और उसकी भेंट को स्वीकार किया। परमेश्वर ने स्वर्ग से वेदी पर आग भेजकर इसे स्पष्ट कर दिया। इसके बाद, दाऊद ने निर्णय लिया कि मन्दिर और उसकी वेदी वहाँ बनाई जाएगी।

दाऊद पूरी तरह से परमेश्वर के लिए एक मन्दिर बनाने के लिए प्रतिबद्ध था। वह समझ गया था कि परमेश्वर नहीं चाहते थे कि दाऊद इसे बनाएँ। दाऊद ने सभी योजनाएँ बनाई जो आवश्यक थीं ताकि सुलैमान इसे बना सकें। इसमें श्रमिकों की नियुक्ति और सभी लकड़ी, पत्थर और धातुओं का संग्रह शामिल था। दाऊद ने सुलैमान को सभी योजनाएँ समझाई। उसने सुलैमान को वह वाचा भी समझाई जो परमेश्वर ने दाऊद के परिवार के साथ की थी।

दाऊद ने सुलैमान से आग्रह किया कि वे सीनै पर्वत की वाचा के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहें। दाऊद ने उससे मन्दिर का निर्माण शुरू करने का भी आग्रह किया। वह चाहता था कि सुलैमान मन्दिर पर काम करता रहे जब तक कि वह पूरा न हो जाए।

1 इतिहास 23:1-29:30

दाऊद ने बहुत सावधानी से सुलैमान को अपने बाद राजा बनाने के लिए तैयार किया। उसके राज्य के व्यापारिक मामलों को अच्छी तरह से व्यवस्थित किया गया था। इनकी देखरेख कई अधिकारियों द्वारा की जाती थी। आराधना की प्रथाएँ भी

अच्छी तरह से व्यवस्थित थीं। इनकी देखरेख लेवियों द्वारा की जाती थीं।

कई वर्षों तक लेवियों ने पवित्र तम्बू में सेवा की थी। जब मन्दिर बन गया, तो उनका अधिकांश कार्य वहीं होता। लेवियों ने यह तय करने के लिए चिट्ठियाँ डालीं कि प्रत्येक समूह कौन-कौन से कार्यों के लिए ज़िम्मेदार होगा।

वहाँ लेवी अधिकारी, न्यायी और मन्दिर के द्वारों के रक्षक थे। कुछ लेवी मन्दिर के अंदर के सभी कार्यों के लिए ज़िम्मेदार थे। इसमें कमरों और सभी वस्तुओं की देखभाल शामिल थी। इसमें याजकों का बलिदान चढ़ाने और लोगों को आशीष देने का कार्य भी शामिल था।

कुछ लेवी संगीतकार थे। उनका कार्य भविष्यवाणी करना और लोगों को गीतों और वाद्ययंत्रों के साथ परमेश्वर की आराधना में अगुवाई करना था। कुछ लेवी मन्दिर के लिए एकत्रित सभी खजानों के प्रभारी थे। ये खजाने शमूएल, शाऊल, योआब, दाऊद और अन्य अगुवों द्वारा अलग रखे गए थे।

कुछ लेवी पूर्वी दिशा में यरदन नदी के किनारे के मामलों का ध्यान रखते थे। अन्य पश्चिमी दिशा के मामलों का ध्यान रखते थे। दाऊद की मन्दिर बनाने की योजनाएँ अच्छी तरह से व्यवस्थित थीं। इनमें यह शामिल था कि मन्दिर कैसा दिखेगा और उसके अंदर क्या होगा। इनमें यह भी शामिल था कि सब कुछ किस सामग्री से बनाया जाएगा।

दाऊद ने आवश्यक वस्तुओं में से कई चीजें प्रदान कीं। इसाएल के अन्य अगुवों ने सोना, चांदी, पीतल, लोहा और मणि दिए। उन्होंने खुशी और उदारता से दिया। दाऊद ने यह पहचाना कि उन्होंने परमेश्वर को वही लौटाया जो उसने उनसे प्राप्त किया था। यह इसलिए है क्योंकि सब कुछ परमेश्वर का है।

दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर सुलैमान और इसाएलियों की सहायता करें ताकि वे उनके प्रति विश्वासयोग बने रहें। दाऊद चाहते थे कि सुलैमान सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर की सेवा करें।